Paper-3 S.S. Haikar

Deg 2+1

module-4 Money Market Equilibrium

वस्तु बाजार का सम्बन्ध उन आर्थिक क्रियाओं से होता है जिनका सम्बन्ध नकदी या तरल सम्पत्ति के लिए मुद्रा की मांग एवं मुद्रा की पूर्ति से होता है। यदि मुद्रा की मांग को L द्वारा, मुद्रा की पूर्ति को M द्वारा बताया जाय तो मुद्रा बाजार में सन्तुलन के लिए $L = M$ को होना चाहिए। मुद्रा की कुल मांग $L = L_t + L_s$ है। यहां L_t मुद्रा का सौदा उद्देश्य व सतर्कता उद्देश्य की मांग और L_s मुद्रा की सट्टा उद्देश्य के लिए मांग है।

कीन्स ने यह माना है कि L_t आय के स्तर Y पर निर्भर करता है अर्थात $L_t = f(Y)$ आय के स्तर (Y) तथा L_t में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। L_s ब्याज की दर पर निर्भर करती है और L_s ब्याज की दर के साथ विपरित दशा में बदलती है यानि यदि ब्याज की दर ऊंची हो तो सट्टा मांग L_s नीचे होगी और अगर नीची है तो L_s ऊंची होगी। इस प्रकार L_s निर्भर करती है (i) पर अर्थात $L_s = f(i)$

इस विवरण से स्पष्ट है कि मुद्रा बाजार के लिए निम्नलिखित समीकरण प्राप्त होते हैं- $L_t = f(Y)$, $L_s = f(i)$ अतः $L = (Y, i)$ मुद्रा की मांग या तरलता पसन्दगी आय स्तर व ब्याज की दर का फलन है।

LM वक्र का निर्माण करना — LM वक्र आय के स्तरों और ब्याज दरों के उन संयोगों को व्यक्त करता है जहां मुद्रा की मांग (L) और मुद्रा की पूर्ति M बराबर होगी यानि मुद्रा बाजार सन्तुलन में होता है अतः LM वक्र खींचने के लिए हमें उन ब्याज की दरों और आय के स्तरों को ज्ञात करना होगा जिन पर मुद्रा की मांग और मुद्रा की पूर्ति दोनों बराबर हों। एक चित्र के द्वारा हम LM वक्र का निर्माण करेंगे। चित्र में आय के 100 करोड़, 200 करोड़ से 500 करोड़ स्तरों पर क्रमशः LY_1, LY_2, LY_3, LY_4, LY_5 तरलता अधिमान वक्रों का एक समूह खींचा गया है। चित्र में OM मुद्रा की वास्तविक मात्रा दी हुई है। मुद्रा की पूर्ति पूरी तरह बेलोचदार है इसलिए पूर्ति वक्र को खड़ी रेखा MQ द्वारा बताया गया है।

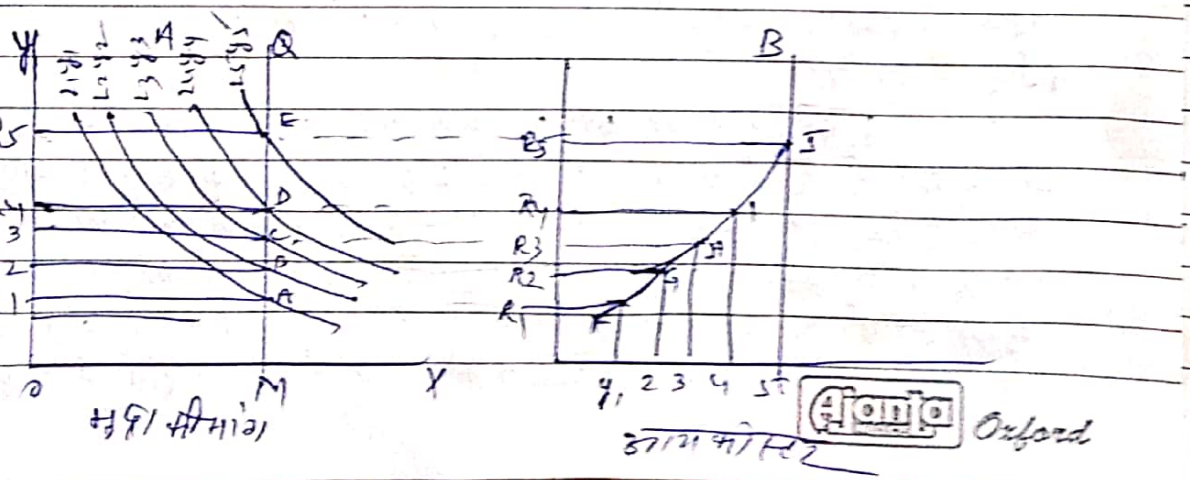

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Scanned with CamScanner

साथ में निर्धारण प्रस्ताव LM व IS को संतुलित आर्थिक स्थिति में रहता है।

अतः हम कह सकते हैं कि हिक्स ने IS तथा LM वक्रों के रूप में मुद्रा बाजार व सामान्य संतुलन के लिए संयुक्त रूप से अनिवार्य है। अब हम यह देखेंगे कि किस प्रकार से एक सामान्य संतुलन में स्थापित होते हैं। जब IS वक्र की ब्याज दर तथा आय की संतुलन जोड़ी LM वक्र की ब्याज दर तथा आय की संतुलन जोड़ी से बराबर होती है तो सामान्य संतुलन स्थापित होता है। इसे एक चित्र की सहायता से समझा जा सकता है। चित्र में IS वक्र व LM वक्र E बिन्दु पर काटती है जो कि इस बिन्दु पर ब्याज दर तथा आय एक साथ ही इस प्रकार निर्धारित होते हैं कि वस्तु बाजार साम्य की स्थिति में होता है तथा मुद्रा की मांग तथा मुद्रा की पूर्ति भी साम्य की स्थिति होती है। यह इसलिए होता है कि LM वक्र मुद्रा की पूर्ति को स्थिर मानते हुए खींचा जाता है।

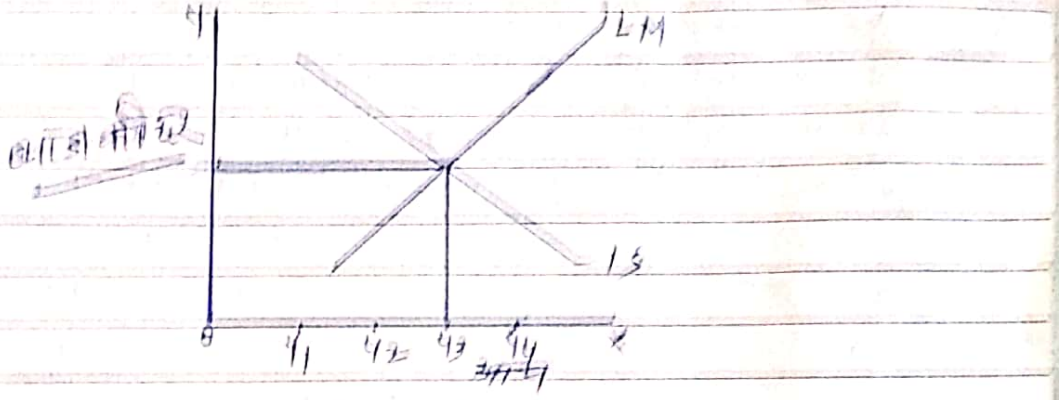

यहाँ यह ध्यान रखना है कि अगर IS रेखा या LM रेखा या फिर दोनों में परिवर्तन आता है तो फिर ब्याज दर तथा आय स्तर में कैसा परिवर्तन होगा।

(i) IS में परिवर्तन होने से — माना कि विनियोग में वृद्धि के कारण IS रेखा दाईं ओर खिसककर IS_2 की स्थिति में आ जाती है जैसा कि चित्र में स्पष्ट है। किन्तु प्रारम्भिक सन्तुलन को बताता है क्योंकि IS रेखा दाईं ओर खिसक जाती है इसलिए नया संतुलन P_1 हो जाता है। इसका अर्थ है कि आय स्तर Y_1 से बढ़कर Y_2 हो जाता है तथा ब्याज दर N से बढ़कर N_1 हो जाती है। इस प्रकार IS रेखा का दाईं ओर खिसकना आय स्तर तथा ब्याज दर दोनों में वृद्धि करता है।

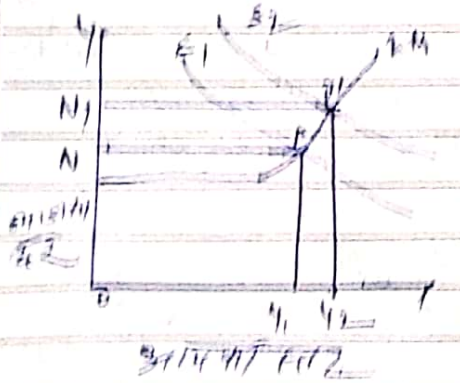

(ii) LM रेखा में परिवर्तन — हम यह मान लेते हैं कि IS रेखा स्थिर रहती है। चित्र में प्रारम्भिक संतुलन बिन्दु P है। मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि LM रेखा को दाईं ओर खिसका देती है और तब इसकी नई स्थिति

Scanned with CamScanner